ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-6*November-2014

जन कवि नागार्जुन

प्रभा दीक्षित
प्राचार्या,
श्री स्वामी नागा जी बालिका डिग्री कालेज,
भरूआ सुमेरपुर, हमीरपुर

सरला देवी
शोध छात्रा,
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, (सतना)

सारांश

साहित्यकार अपने समय की हलचलों से एक सवेदनशील नागरिक की तरह जुड़ा होता है । साथ ही वह समकालीन घटनाओं के व्यापक मानवीय आयामो को भी देखता है नागार्जुन भारतीय जन संस्कृति की प्रगतिशील परम्परा मे संघर्षशील आस्था के सर्वाधिक सशक्त रचनाकार हैं । उनमें विरासत के रूप मे मैथिल कोकिल विद्यापति , संस्कारो के रूप मे कालिदास और सौंदर्यबोधी विविधता के रूप मे महाप्राण निराला किलोलें करते दिख जाते हैं । छरू विविध भाषाओं मे लेखनी की पैठ रखने वाले नागार्जुन को काव्य के जन चरित्र को उजागर करने वाली अन्तर्हषि अद्वितीय है । उनकी अनेक रचनाएँ प्रमाणित करती ह कि " विविध अन्तविर्रोध वक्तव्यों और खरीखोटी रचनाओं के बावजूद वे हिन्दी की प्रौढ राजनीतिक प्रगतिशील कविता के 'प्रथम नागरिक ' हैं।

मुख्य शब्द : नागार्जुन, क्रान्ति, राष्ट्रीयता

प्रस्तावना

संक्षिप्त जीवन वृत्त

नागार्जुन का जन्म 1911 ईस्वी मे ज्येष्ठ पूर्णिमा को हुआ। उनका पैतृक ग्राम मधुबनी (बिहार) आंचल का ग्राम" तरौनी " है जो दरभंगा से 23 किमी0 उत्तर पूर्व मे स्थित है। आप पिता गोकुल मिश्र व माँ उमा देवी के एक मात्र जीवित संतान थे । ज्ञातव्य है कि इनके पूर्व जन्मी पाँचो संताने बाल्यावस्था में ही काल कवलित हो गयी थीं। नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। जब वह चार वर्ष के थे माँ चल बसीं। बालक वैद्यनाथके जीवन मे यहीं से संघर्ष प्रारम्भ हो गया। कारण कि पिता घुमक्कड, भंगेडो, लापरवाह संस्कारहीन रूढिवादी, कठोर एवं फक्कड प्रकृति के थे। उनकी आर्थिक स्थिति शोचनीय थी। बालक वैद्यनाथ ने तरौनी में मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण कर आगे की पढाई काशी के क्वीन्स कालेज (अब वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय) में करके शास्त्री की उपाधि प्राप्त कर अपने गाँव लौट आए, जहाँ उनका विवाह 18 वर्ष की उम्र में 12 वर्ष की कन्या अपराजिता देवी के साथ हुआ पर वह घर मे न रूककर कलकत्ता चले गये जहाँ प्राकृत भाषा का अध्ययन किया। आप सन् 1934 मे काफी समय के लिये घर से दूर जाकर काठियावाड़, पंजाब , तिब्बत , लंका आदि अनेक स्थानों में भटकते रहे। लंका मे ही आपने बुद्ध धर्म अपनाकर बौद्ध भिक्षु बनने पर यायावर अपना नाम 'नागार्जुन' रखा। अपनी यायावर प्रकृति के अनुसार वह स्वामी सहजानन्द के आहवान पर लंका छोड कर सन् 1938 मे बिहार लौट आये । यहाँ किसान आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण प्रथम बार 10 माह की और दूसरी बार 8 माह की जेल की सजा काटनी पडी भ्रमण काल मे उन्हें जन समुदाय में गरीबी और दरिद्रता का ताँडव देखने को मिला इससे और स्वंय की दरिद्रता की अनुभूति के कारण वह मार्क्सवाद से निजता अनुभव करने लगे और मार्क्सवादी बन गये कविता क संस्कार तो उनम मध्यमा करते समय ही पनप गये थे। जिसका पोषण वाराणसी पहुँच कर हुआ वहाँ तो श्लोक रचना से प्राप्त पुरस्कार उनकी जिविका बहुत सहायक हुये इसी के साथ वह हिन्दी और मैथिलि में भी रचना करने लगे 1930 ई0 मे पहली रचना प्रकाशित हुई। उनकी हिन्दी को प्रथम प्रकाशित रचना 'हे राम'1935 मे साप्ताहिक विश्वबन्धु लाहौर से प्रकाशित हुई यात्री नाम से उनकी प्रसिद्ध रचना ' बादल को घिरते देखा है ' सन् 1940 मे 'सरस्वती' मे छपी। उन्होने 9 मैथिली और हिन्दी बुकलेट्स के साथ 10 हिन्दी काव्य संग्रह लिखे। 'मेघदूत' का हिन्दी में अनुवाद किया।वह जे0 पी0 आन्दोलन में भी शामिल हुए और बाद मे उसकी आलोचना भी की"।3 नागार्जुन ने न केवल समग्रता में प्रस्तुत किया बल्कि वे परवर्ती रचनाकारों के लिये प्रेरक भी रहे। वे संघर्षशील सौंदर्यबोधी सर्जक के अन्तर्सघर्षी स्वल्प की संपूर्णता में हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं।4 जिन्हे अहसास है " लेखनी ही है हमारा फार/धरा है पर सिंधु है मसिपात्र /तुच्छ से अति

तुच्छ जन की जीवनी पर हम लिखा करते/कहानी, काव्य, रूपक गीत/क्योंकि हमको स्वयं भी तुच्छता का भेद है मालूम"।

डा0 प्रभा दीक्षित नागार्जुन का रचना संसार एवं प्रतिबद्ध कविता पर गहन चिन्तन करते हुए घोषित करती हैं कि " आधुनिक काल मेंमार्क्सवादीसमीक्षकों जैसे डा0 रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान , नामवर आदि के कारण प्रगतिशील (जनवादी) कविता का हिन्दी साहित्य मे भारी प्रभाव दिखाई दे रहा है , यही कारण है, लोग जनवादी बनने के लिए शार्टकट का सहारा ले रहे हैं————————— नागार्जुन ने कभी इस स्तर तक अपनी कविता को ले जाने का प्रयास नही किया। वह अपनी प्रतिबद्धता का बयान करते हुये लिखते हैं "प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ , शतघा प्रतिबद्ध हूँ /आबद्व हूँ /जीतृ आबद्ध हूँ /स्वजन परिजन के प्यार की डोर में/प्रियजन की पलकों की कोर में

इतना होते हुए भी वे कट्टर नहीं थे मार्क्सवाद के प्रति , यदि कट्टर होते तो 1962 की भारत पर चीनी आक्रमण से आहत होकर यह कभी न लिखते ———— " वह माओ कहाँ है ? वह माओ मर गया/वह माओ कौन है ? बेगाना है वह माओ/आओ , इसके नफरत के श्ल से नहलाओ/आओ इसके खूनी दाँत उखाड दें,/इसको जिन्दा ही कर मे गाड़ दें।[5]" सच तो यह है कि मार्कसवादी चिन्तन उनके लिये जनता को संघर्षो के प्रति प्रेरित करने का माध्यम था , साधन था । वह जनता के दुख द्वन्दो से पूर्ण परिचित थे/ उन्हे आम आदमी की पीडा का गहन शोक था/नेताओं की असलियत जानते थे तभी लिखते हैं।

" भटक गया है देश दलों के बीहडवन में/ कदम– कदम पर संशय ही उगता है मन में/ नेता क्या है निज–निज गुट के महापात्र हैं। राष्ट्रकहाँ बस शेष–शेष बस राज्य मात्र है।"[6]

जनकवि नागार्जुन देश की गरीबी , भुखमरी, अकाल, बाढ़, राजनीतिक भ्रष्टाचार, कथित भ्रष्टाचारियों के शर्मनाक समझौते सभी कुछ अपनी कविता में लिखते रहे। आप के लिये दल से अधिक महत्वपूर्ण दलित हैं। वो शोषितों, दलितों के प्रति शुभ चिन्ता व्यक्त करते हुये जीन मरने के लिये संकल्पित अपनी कविता में लिखते हैं।" मै तुम्हारे लिये ही जियूँगा मरूँगा। मै तुम्हारे इर्द गिर्द रहना चाहूँगा/मै तुम्हारे ही प्रति अपनी वफादारी निभाऊँगा /आओ खेत मजदूर भूमिदास नौ जवान/आओ खाद्दान श्रमिक और फैक्ट्री वर्कर नौ जवान/आओ कैंपस क छात्र और फैकल्टियों के नवीन/हाँ–हाँ तुम्हारे ही अन्दर तैयार हो रहे हैं प्राध्यापक/आगामी युगों के लिबोटर।[7]

अब आप समकालीन कविता के प्रखर आलोचक विश्वनाथ तिवारी को ही लीजिये वे लिखते हैं " नागार्जुन कविता मे दल के साथ तो नहीं मगर जन के साथ बराबर बंधे रहे। लोक जीवन और लोक मानस को जितनी आत्मीयता से नागार्जुन ने ब्यक्त किया है , उतना किसी दूसरे ने नहीं किया है। " 8 समे कोइ संदेह नही कि नागार्जुन ने अभिब्यक्ति के खतरों की परवाह किए बिना जिन राजनैतिक कविताओं की रचना में अपने को व्यस्त रखा। लगातार कविताओं को हथियार बनाकर शोषण के अड्डों, मठों और गढो को निशाना बनाया आप की दृष्टि से शोषित और दलित कभी ओझल नही हुए।

"आधुनिक जनकवि की असली पहचान उसकी राजनैतिक सामाजिक कविताओं से होती है क्योंकि जनता मे अतीत और वर्तमान का निर्णय राजनीति करती है। इसलिए वह कवि देश समाज के प्रति अपना दायित्व कैसे पूरा करेगा जो समकालीन राजनीति के विरोध में खडे होने का साहस नही रखता"।[9] इस दृष्टि से देखने पर नागार्जुन खरे जनकवि सिद्ध होते हैं उन्होने अपनी रचनाओं मे गाँधी नेहरू युग से साथ इन्दिरा युग जनता शासन के काल के अतिरिक्त लोकतान्त्रिक अफवाहे, भ्रष्टाचार, हिंसा, मानसिक मनोवृत्ति, राजनीति की जनविरोधी नीतियों की अच्छी खाज खबर ली है जम कर बरिवया उधेडी है सन् 67 से 77 तक की रचनाओ का काब्य ग्रन्थ ' खिचडी विरलव देखा हमने ' इस बात का प्रामाणिक दस्तावेज है विप्लव इसमे जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह देवरस, संजय गाँधी आदि पर बहुत सी रचनाएँ हैं। सन् 1975 मे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागाँधी द्वारा आपातकाल लगाए जाने से नागार्जुन की कलम ने उस पर तीव्र विरोध करते हुए लिखा है।

" इन्द जी , इन्दु जी/क्या हुआ आपको/बेटे को तार दिया बोर दिया बाप को/छात्रा के लहू का चस्का लगा आप को/काल चिकने माल का मस्का लगा आपको/किसी ने टोका तो ठस्का लगा आप को /अंट –संट बक रही जनून में/ शासन का नशा घुला खून में / फूल से भी हल्का/समझ लिया हत्या के पाप को।"

नागार्जुन एक जगह बैठकर कलम घिसने वालों में नहीं थे, वे घूम–घूम कर अपनी कविताओं क लिए प्रेरणा देने वाले कवि थे/यथार्थ परक इस उनकी रचनाएं देखने में सरल प्रतीत होती हैं लेकिन उनमे करारा व्यंग अन्तर्निहित रहता है/ब्यंग्य का हथियार उनकी असलो पहचान है ठीक वैसे ही जैसे भगवान परसुराम की पहचान उनका कृपाण (फरसा) है नागार्जुन क्रांति धर्मी है किन्तु यह क्रान्ति मुखौटे वाली नहीं/उस के तो वो घोर विरोधी हैं उन पर व्यंग बाण छोड़ते हुये लिखते हैं।

"ऊपर ऊपर मूक ,क्रान्ति, विचार क्रान्ति, सम्पूर्ण क्रान्ति /कंचन क्रान्ति मंचन क्रान्ति, किंचन क्रान्ति/रहेगी भीतर भीतर तरल मंदिर भ्रांति "। 10 वे इस क्रान्ति के लिए किसान आन्दोलन मे जेल जाते हैं और आपातकाल के विरोध मे भी हवा खाते हैं लेकिन सत्ता की हिंसक कार्यवाहियों के प्रति वह सदैव जूझते हैं वह समाज के जीर्ण शीर्ण रूढिग्रस्त ढाँचे को नेस्तनाबूद करने और नव संस्कृति के निर्माण मे अपने को मिटाने मे नही झिझकत। इस प्रकार हम देखते है कि कवि नागार्जुन की जीवन गाडी यौवन मे पग रखते ही जिस पथ पर चल पडी थी कविता और कथा साहित्य के लक्ष्य को सामने रख कर , दुखी और अहसास और कथा साहित्य के लक्ष्य को सामने रखकर, दुखी और अहसास जन समुदाय को मुक्ति दिलाने की लालसा से, अपनी परवाह किये बिना सारे कष्टों को झेलते हुए उनके अवसान 1998 तक बराबर उसी ऊबड खाबड पथ पर चलती रही, बिना रुके, बिन परास्त हुए। उनकी आत्मा को कचोटने वाला जो भो दृश्य सामने

आया, वह उनकी रचनाओं का विषय बन गया। वह जितना सामान्य जनों के बीच रहे, उनमे आत्मीयता बढाई उतना विशिष्ट जनो के बीच नही और यही उनके जनवादी होने का प्रमुख दर्पण है, कसौटी है प्रमाण है।

ग्रन्थ सूची

1. हिन्दुस्तान 05/10/2014 पृष्ठ 15
2. वाचस्पति दस्तावेज 13/14 पृष्ठ 27
3. डा0 प्रभा दीक्षित मुक्तिबोध एवं नागार्जुन का काव्य दर्शन पृष्ठ 70
4. रोहिताश्व रू समकालीन कविता मार्क्सवादी सौंदर्य शास्त्र के परिप्रेक्ष्य मे पृष्ठ 160–161
5. धर्मयुग 27 जून, 1963 पृष्ठ – 1
6. हिन्दी मे आधुनिक प्रतिनिधि कवि पृष्ठ 460
7. वही पृष्ठ 461
8. समकालीन हिन्दी कविता, पृष्ठ 65, डा0 विश्वनाथ तिवारी
9. डा0 प्रभा दीक्षित मुक्तिबोध एवं नागार्जुन का काव्य दर्शन पृष्ठ 149
10. नागार्जुन का रचना संसार, डा0 विजय बहादुर सिंह पृष्ठ 58